



स्थलाकृतियों का भूमि उपयोग प्रतिरूप पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन: उत्तर प्रदेश राज्य के मिर्जापुर जनपद का एक प्रतीकात्मक अध्ययन

डॉ रजनीश कुमार¹ एवं नाहिद खान²

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, सी एस एन पी जी कॉलेज हरदोई, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

²शोधार्थी, सी एस एन पी जी कॉलेज हरदोई, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

Email: nahidkhanrob@gmail.com

सारांश:

स्थलाकृति एक व्यापक शब्द है जो किसी भू-भाग का विस्तार से वर्णन करता है। इसके अलावा यह मानचित्रों या चार्ट के सतह को चित्रित करने की कला है। यह प्राकृतिक और मानव निर्मित विशेषताओं को दर्शाता है और उनकी सापेक्ष स्थिति और ऊँचाई के बारे में बताता है। स्थलाकृति में शीर्ष एक ग्राफ के साथ संयुक्त होता है जिसका अर्थ है लिखना और वर्णन करना। यह केवल सतह से विशेषताओं को दर्शाता है। यह किसी क्षेत्र की अनुमानित ऊँचाई और रूप रेखा को भी दर्शाता है। भूमि का उपयोग भौतिक कारकों द्वारा निर्धारित किया जाता है जैसे स्थलाकृति, मृदा, जलवायु खनिज और जल की उपलब्धता। मानवीय कारक जैसे जनसंख्या और प्रौद्योगिकी भी भूमि उपयोग प्रतिरूप के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। स्वामित्व के आधार पर भूमि को निजी भूमि और सामुदायिक भूमि में बांटा जा सकता है। कृषि विज्ञान की वह शाखा व कला है जिसके अन्तर्गत फसलों को उगाने व पशुओं को पालने का अध्ययन किया जाता है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह प्राथमिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला क्षेत्र है।

मुख्य शब्द: स्थलाकृति, भू-भाग, जनसंख्या, कृषि विज्ञान।

प्रस्तावना/परिचय:-

अंतर्राष्ट्रीय कृषि संस्थान रोम ने 1924 में वैश्विक स्तर पर कृषि जनगणना का प्रयास किया। शुरुआत में प्रतिक्रिया संतोषजनक नहीं थी। विभिन्न देशों में गणना की इकाई भी भिन्न-भिन्न थी। जब उपयोगी जानकारी मिली तो हर 10 साल बाद कृषि जनगणना कराने का निर्णय लिया। कृषि मानव जाति के उपयोग के लिए मिट्टी से पौधे उगाने की एक कला है। कृषि के कारण ही मानव एक स्थान पर बस गया है। कृषि मनुष्य की सबसे पुरानी एवं प्रमुख गतिविधियों में से एक है। कृषि भूमि का उपयोग भूमि के दुरुपयोग के उचित उपयोग का महत्वपूर्ण संकेतक है। कृषि क्षेत्र में तीव्रता और स्थिति को दर्शाने के लिए सामान्य भूमि उपयोग, कृषि क्षेत्रीकरण और फसल पैटर्न का विश्लेषण उचित तरीके से करने में मदद करेगा। मिर्जापुर जिले में कृषि उपयोग के बदलते पैटर्न का अध्ययन किया

जायेगा। यह भौगोलिक विश्लेषण और कृषि भूमि उपयोग और इसके बदलते पैटर्न का अध्ययन कर रहा है। कृषि मानव की सबसे पुरानी एवं महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसे प्राकृतिक पर्यावरण के नियन्त्रण में किया जाता है। विश्व में बढ़ते औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के बावजूद कृषि भोजन का महत्वपूर्ण स्रोत है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत की जनसंख्या का 39.4 प्रतिशत आबादी कृषि उद्योग पर निर्भर है। नाबार्ड के अनुसार 10.7 करोड़ परिवार खेती पर निर्भर हैं।

मिर्जापुर क्षेत्र का भौगोलिक एवं सामाजिक अध्ययन:-

इस शोध के लिए अध्ययन क्षेत्र के रूप में गंगा एवं यमुना के उपजाऊ मैदान में स्थित मिर्जापुर जनपद का चुनाव किया गया।

निर्देशांक 25.15°N(उत्तरी) और 82.58°E देशान्तर (Longitude) (पूर्वी) के आसपास है। यह शहर वाराणसी से लगभग 48 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह भारत देश के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। इसका क्षेत्रफल 4521 km है। 2011 की जनगणना के अनुसार, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले की कुल जनसंख्या 24,96,970 है, जिसमें 1,312,302 पुरुष और 1,184,668 महिलाएं हैं। यहाँ रबी, खरीब, जायद एवं बागवानी फसले उगाई जाती हैं। इसमें गन्ना, धान, गेहूँ प्रमुख फसले हैं। सामाजिक दृष्टि से यह जनपद बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह जनपद प्रचीन काल से ही प्रसिद्ध है। यह जनपद प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। यह जनपद अर्न्तीय स्तर पर विख्यात है।

Figure 1: जनपद मिर्जापुर का अवस्थिति मानचित्र

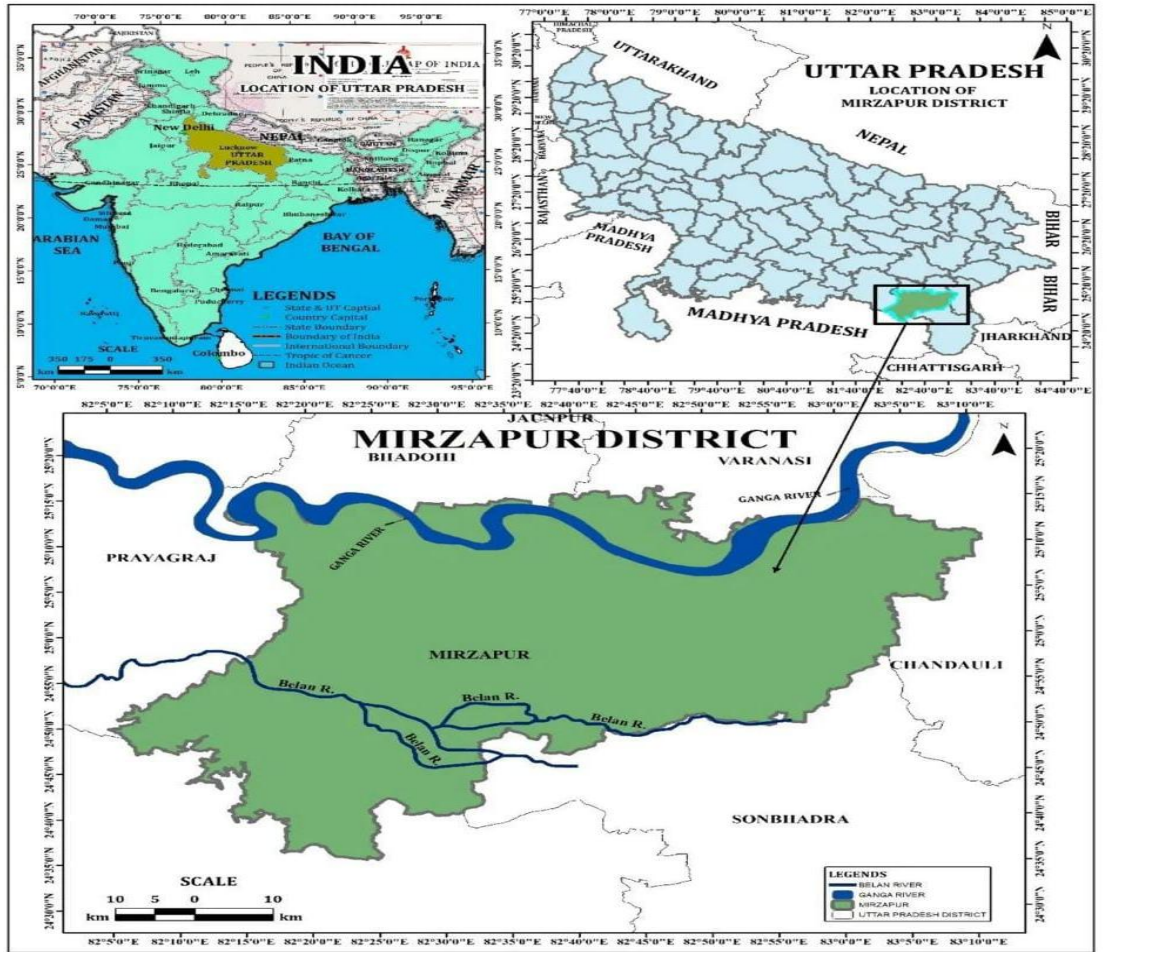


Figure: 2- जनपद मिर्जापुर की भौमिकीय मानचित्र

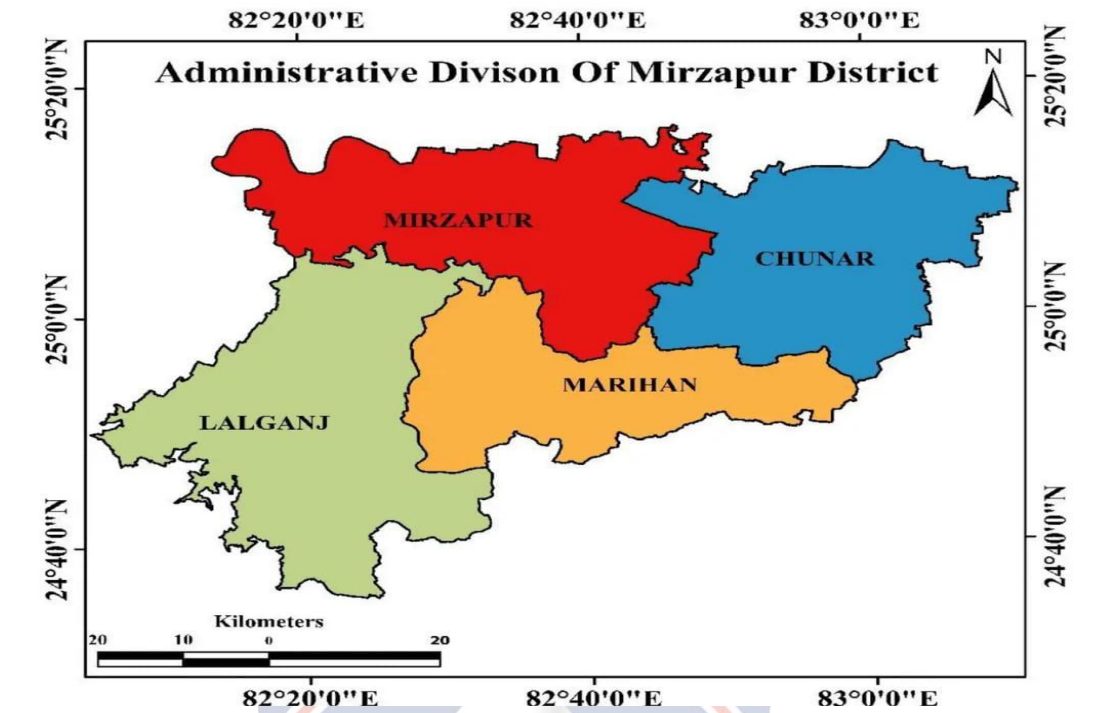
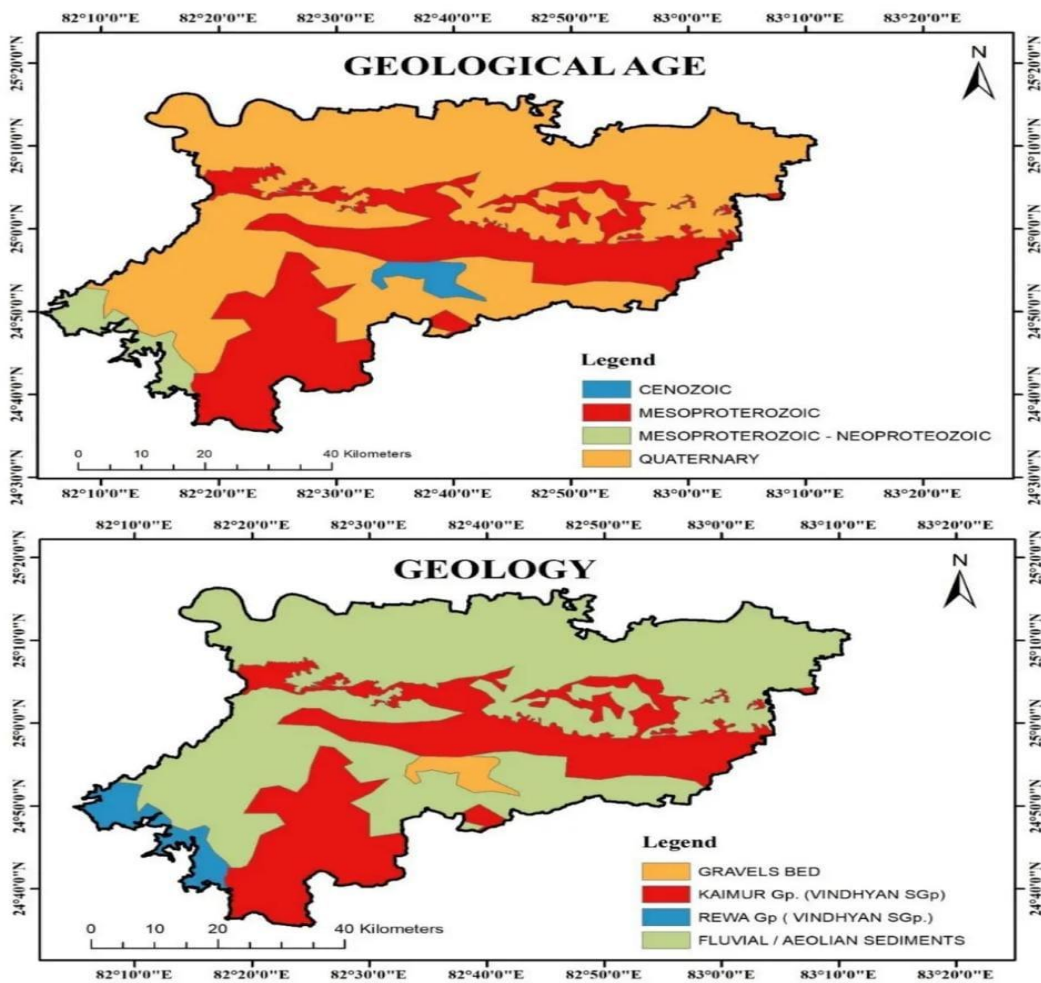


Figure: 3- जनपद मिर्जापुर का प्रशासनिक मानचित्र



अध्ययन क्षेत्र का भू-आकृतिक विश्लेषण :-

स्थलाकृतिक विविधता: उत्तर प्रदेश के इस जिले में उत्तर में जलोढ़ मैदान (Alluvial plain) और दक्षिण में कैमूर पहाड़ियों (Kaimur Range) का पठारी हिस्सा शामिल है।

जल निकासी तंत्र: उत्तरी भाग में गंगा का मैदानी क्षेत्र है, जहां डेंड्रिटिक (Dendritic - वृक्ष के आकार का) अपवाह प्रतिरूप पाया जाता है। दक्षिणी पठारी भाग में उच्च अपवाह घनत्व (High drainage density) और जालीदार (Trellised) अपवाह प्रतिरूप है, जहां गंधक, मढ़ो, ओझला जैसी सहायक नदियां हैं।

भू-विज्ञान (Geology): क्षेत्र का दक्षिण-पूर्वी और दक्षिणी हिस्सा मुख्य रूप से विंध्यन चट्टानों (बलुआ पत्थर, चूना पत्थर, और शेल) से बना है, जो अत्यधिक अपरदित और पहाड़ी हैं।

ढाल (Slope): क्षेत्र की ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है, जो अंततः गंगा के मैदानी इलाके से मिलती है।

भूमि उपयोग: विंध्य पठारी क्षेत्रों (40% से अधिक) पर कंकरीली मिट्टी के साथ वनाच्छादित पहाड़ी ढलान हैं, जबकि उत्तर में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी कृषि के लिए उपयुक्त है।

कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप :-

जलवायु: जिले की जलवायु नम और आद्र है, वार्षिक औसत वर्षा 1067 मिली मीटर गर्मियों के दौरान औसत तापमान 32°C जबकि सर्दियों में 16°C रहता है। जिला समुद्र तल से 90 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

तालिका 1: मीरजापुर जनपद के विकासखंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2005)

वर्ष / विकास खण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृष्य बेकार भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एंव कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारा गाह	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल		
1. छानवे	35597	726	1	1703	1159	773	401	3967	0	1132	
2. कोन	9670	0	903	1046	99	26	1354	0	320		
3. मझवां	11785	5	618	1145	18	66	1720	1	217		
4. नगर सीटी	24756	425	3	608	1725	943	1301	2589	1	715	
5. पहाड़ी	32590	104	63	988	805	630	571	3017	3	1499	
6. लालगंज	39392	953	0	1034	1855	7	837	3434	7	2226	
7. हलिया	94467	337	77	2441	6354	204	2	2030	7123	20	7027
8. मड़िहान	56610	142	19	1651	5588	117	9	2575	6066	21	8659
9. राजगढ़	83158	262	50	2004	1275	103	4	1149	6895	715	7202

10. सीखड़	11580	3	882	230	42	47	1670	0	384
11. नरायनपुर	23053	419	968	428	48	241	2961	10	137
12. जमालपुर	26462	355	756	387	12	181	3165	4	107
योग जनपद	451862	109 736	14649	3350 8	863 9	9490	45904	785	29712

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2005

तालिका 1: मीरजापुर जनपद के विकासखंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2025)

वर्ष / विकासख ण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	वन	कृष्य बेकार भूमि	वर्तमा न परती	अन्य परती	ऊसर एव कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारा गाह	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल
1. छानवे	34022	852 9	501	87	976	1245	4005	0	188
2. कोन	8670	0	150	70	948	612	2032	0	198
3. मझवां	11227	9	183	69	856	382	2443	1	146
4. नगर सीटी	24729	610 7	1243	71	110	313	2934	1	296
5. पहाड़ी	37157	133 47	600	113	141	251	3335	3	311
6. लालगंज	51639	134 12	819	51	204	1049	3477	3	285
7. हलिया	76824	407 34	1729	125	326	2118	6849	16	3123
8. मड़िहान	51125	190 53	2053	142	238	1074	5627	15	3227
9. राजगढ़	79385	313 95	1103	370	290	1579	7113	396	2515
10. सीखड़	7567	3	165	56	110	545	1865	4	244
11. नरायनपुर	23788	146 7	327	33	162	587	3200	10	120
12. जमालपुर	28266	537 1	279	24	124	246	3709	4	125
योग जनपद	437243	139 427	9206	1213	164	21	10114	456	10784

स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2025

फसले: धान, ज्वार, मक्का, बाजरा, गेहूँ, जव, चना, मटर, अरहर, मसूर, राई, सरसो, अलसी, उड़द, मूँग, गन्ना, आलू इत्यादि।

सिंचाई के संसाधन: नहर, ट्यूबवेल, नलकूप, वर्षा।

स्थला कृतियों का भूमि उपयोग पर प्रभाव :-

भू-आकृति विज्ञान और समाज के बीच का अन्तर सम्बन्ध तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है। क्योंकि मानवीय गतिविधियाँ, अभूतपूर्व गति से भू-दृश्यों को बदल रही है। अनियमित भूमि उपयोग परिवर्तन अक्सर पर्यावरण क्षरण, प्राकृतिक खतरों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि और पारस्थितिकी तंत्र, सेवाओं के नुकसान का कारण बनते हैं। तराई क्षेत्र में भूमि में हस्ताक्षेप, वनों में हस्ताक्षेप इत्यादि से प्रभावित हो रहा है।

शोध का उद्देश्य :-

- क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग में अस्थायी परिवर्तन की जाँच करना।
- अध्ययन क्षेत्र की फसल उत्पादकता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :-

- पर्यावरण क्षेत्र की कृषि भूमि उपयोग को प्रभावित करता है।
- औद्योगिक विकास, शहरीकरण और वाणिज्यिक गतिविधियाँ, कृषि भूमि उपयोग पर प्रभाव डालती हैं।
- अध्ययन क्षेत्र में कृषि प्रतिरूप का स्थानिक एवं कालिक परिवर्तन का अध्ययन।
- कृषि नवाचार के स्वीकार करने और कृषि उत्पादकता के मध्य प्रत्यक्ष समानुपातिक सम्बन्ध है।
- तकनीकी विकास और कृषि विकास के बीच धनात्मक सम्बन्ध है।

आंकड़ा एवं शोध विधि तंत्र :-

सुदृढ़ शोध पद्धति को अपनाना, शोध अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वर्तमान अध्ययन में बुनियादी पहलुओं और उनके चरों का ध्यान में रखते हुए अनुसंधान पद्धति अपनायी जायेगी। संक्षेप में उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनुसंधान पद्धति इस प्रकार होगी। सम्पूर्ण शोध कार्य प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक डेटा गहन क्षेत्र कार्य के माध्यम से एकत्र किया जायेगा। प्रश्नावली निष्पादित करके किसानों, स्थानीय संस्थाओं के प्रमुखों का साक्षात्कार और व्यक्तिगत अवलोकन आयोजित करके प्रश्नावली में सामान्य भूमि उपयोग, फसल भूमि उपयोग, किसानों की खेती के तरीके, उर्वरकों का उपयोग, शिक्षा, आय, कृषि से सम्बन्धित समस्याएँ जैसे पहलू शामिल हैं। माध्यमिक डेटा प्रकाशित रिपोर्टों सार, पत्रिकाओं, जनगणना पुस्तिकाओं जैसे दस्तावेजों से एकत्र किया जायेगा। सामाजिक आर्थिक समीक्षा जिला सांख्यिकी सार उत्तर प्रदेश और मिर्जापुर जिले का राजपत्र, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, जे और थारलैण्ड अनुसंधान विकास एजेन्सियों की रिपोर्ट और मिट्टी सर्वेक्षण इकाईयों के माध्यम से।

डेटा विश्लेषण के तरीके :-

क्षेत्र, कार्य की प्रक्रिया के माध्यम से डेटा संग्रह की संरचना तीन चरणों में की जायेगी जैसे- मिर्जापुर जिले की तहसील का चयन। तहसीलों से गांव का चयन और इस गांव से उत्तरदाताओं का चयन। अध्ययन के लिए चयनित अवधि 2005 से 2025 होगी। एकत्र किये गये डेटा का विश्लेषण विभिन्न उपयुक्त सांख्यिकीय तरीकों को लागू करके किया जाता है और तालिका मानचित्र और आरेखों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य और कृषि भूमि उपयोग के स्थानिक और लौकिक पहलुओं का विस्तार से अध्ययन किया गया। 2005 से 2025 की अवधि के लिए प्राप्त आंकड़ों को कुल भौगोलिक क्षेत्र के प्रतिशत में परिवर्तित किया गया। भूमि उपयोग पैटर्न दिखाने के लिए उपयुक्त चित्र बनाये गये और पाठ की व्याख्या की गयी। सहसम्बन्ध, प्रतिगमन, फसल रैकिंग, फसल संयोजन, फसल विविधिकरण, फसल एकाग्रता और कृषि उत्पादकता जैसे सांख्यिकीय तरीकों का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया जायेगा।

परिणाम:

- जनपद के वह क्षेत्र जो गंगा एवं जमुना के दोआब में पड़ते हैं वहां पर भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन कृषि के दृष्टिकोण से बेहतर रहा है वहीं जो एरिया दोआब से दूर पड़ता है वहां कृषि कार्य से इतर भूमि उपयोग प्रतिरूप देखने को मिलता है।
- जनपद में गरीबी और पिछड़ापन ज्यादा होने के कारण अधिकांश लोगों की जीविका का साधन कृषि है जिससे जनपद का भूमि उपयोग प्रतिरूप निर्धारित होता है।
- जनपद का अधिकांश एरिया पर्वतीय एवं पठारी होने के कारण बंजर एवं परती भूमि उपयोग प्रतिरूप भी अधिकांश प्रतिशत के रूप में देखा जा सकता है।

सुझाव:

- उन्नत तकनीक और प्रबंधन: रिमोट सेंसिंग और स्थानिक मॉडल का उपयोग करके भूमि की उत्पादकता का आकलन करें।
- फसल विविधीकरण (Crop Diversification): पारंपरिक फसलों की जगह उच्च मूल्य वाली नकदी फसलों, जैसे फलों और सब्जियों को अपनाएं।
- परती भूमि का सही उपयोग: परती या बंजर भूमि पर वानिकी, चरागाह या सतत कृषि प्रणालियों को अपनाकर भूमि की उर्वरता वापस लाएं।
- मिश्रित कृषि (Mixed Farming): केवल फसल पर निर्भर रहने के बजाय डेयरी, कुक्कुट पालन, और मत्स्य पालन (विशेषकर अंतःस्थलीय) जैसी गतिविधियों को जोड़ें।
- वैज्ञानिक खेती (Scientific Farming): पोषक तत्वों के प्रबंधन और मृदा संरक्षण के लिए फसल चक्र (Crop Rotation) और अंतःफसल (Intercropping) जैसी तकनीकों का उपयोग करें।
- जल प्रबंधन: सूखे क्षेत्रों में उन्नत सिंचाई तकनीक (जैसे ड्रिप सिंचाई) का उपयोग करें ताकि भूमि की उत्पादकता लंबे समय तक बनी रहे।
- नीतिगत समर्थन: सरकार द्वारा कृषि नीतियों में सुधार, जैसे कृषि भूमि को गैर-कृषि उपयोगों से बचाना और ग्रामीण क्षेत्रों में वैज्ञानिक प्रगति को बढ़ावा देना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Barlow, R. and Jonson V.W. (1954) Land Problems and policies, M.C. Crow Hillbook, Company in New York, pp-99.
2. Singh, B.B. (1979) Agricultural Geography IN Hindi, Tara Publication Varanasi.
3. stamp L.D. (1931): The Land Utilization survey of Geographical journal 78.
4. Ali, S.M. (1949): Land Utilization survey in India, The geography, 2.
5. Shafi, M. (1960) Land Utilization of Eastern U.P., Aligarh University Press, Aligadh.
6. Bhatiya, S.S. (1965) Patterns of Crop combination and Diversification in India, Economic geography.
7. Singh, B.N. (1968): "Agricultural Efficiency in India", the Geographers.
8. हुसैन, माजिद (2003) कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

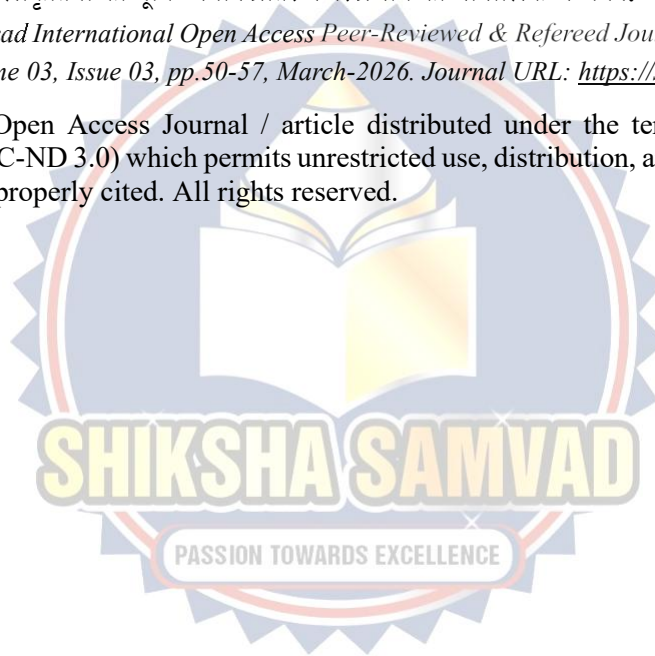
- 9.... (2022). Using Remote Sensing Technique to Investigate Land Use/ Land Cover Changes in Varanasi District (UP), India. https://doi.org/10.1007/978-981-16-7731-1_21
10. Singh, M., & Vozenilek, V.. (2014). Remote Sensing and Land Use/Land Cover Trajectories. 2014(3). <https://doi.org/10.4172/2169-0049,1000123>
11. Singh, U., & Narain, S.. (2009). Ethno-botanical wealth of Mirzapur District, U.P. 135(2).
12. Zhang, Y., Shi, Q., & Cao, L. (2020). High-resolution land cover change detection using drone remote sensing: A case study in the Yellow River Delta. *ISPRS Journal of Photogrammetry and Remote Sensing*, 169, 305-316.
13. Wang, Q., Zhang, C., Todd, S. W., & Morisette, J. T. (2021). Integrating remote sensing and field data for improving land cover change mapping. *Remote Sensing of Environment*, 252, 112172.

Cite this Article:

डॉ रजनीश कुमार एवं नाहिद खान, “स्थलाकृतियों का भूमि उपयोग प्रतिरूप पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन: उत्तर प्रदेश राज्य के मिर्जापुर जनपद का एक प्रतीकात्मक अध्ययन” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research*, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.50-57, March-2026. Journal URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ रजनीश कुमार एवं नाहिद खान

For publication of research paper title

स्थलाकृतियों का भूमि उपयोग प्रतिरूप पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन:

उत्तर प्रदेश राज्य के मिर्जापुर जनपद का एक प्रतीकात्मक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed
Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03,
Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and
the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>